'आत्म-साक्षात्कार कठिन नहीं है...'

[पू. बापूजी का आत्म-साक्षात्कार दिवस : २७ सितम्बर २००३]

❊ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ❊

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

'यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, तो भी तू ज्ञानरूप नौका द्वारा निःसंदेह संपूर्ण पाप-समुद्र से भलीभाँति तर जायेगा।' **(श्रीमद्भगवद्गीता : ४.३६)**

कोई अति पापी हो, महापापी हो किंतु यदि वह आत्मज्ञान पा ले तो तत्काल तर जाय।

लोगों ने आत्म-साक्षात्कार को कठिन मान लिया है। 'ज्ञान पाना मुश्किल है... असंभव है... हम तो पापी, दीन-हीन हैं... हमारी क्या बिसात ? हम तो संसारी हैं... यह तो साधुओं का काम है...' ऐसा सोचकर अपने को तुच्छ बना लिया है।

'अरे ! तुम आत्मा हो। निष्फिक्र, निश्चिन्त एवं निर्भय होकर जियो। जो हो गया उसे सपना समझो। जो हो रहा है वह भी सपना है। जो होगा वह भी एक दिन सपना हो जायेगा।

अपने को परमात्म-प्राप्ति के लिए अयोग्य मानना अथवा पापी मानना व दोषों से ऊपर न उठना ही बड़ा पाप है।

अपि चेदसि पापेभ्यः... चाहे कोई दुराचारियों में आखिरी नंबर के हों, फिर भी किये हुए पापों को फिर से न करना, की हुई भूल को फिर से न दोहराना, आर्तभाव से भगवान से प्रार्थना करना - उसका सब पापों से सदा के लिए पिंड छुड़ा देता है।

सच्चे हृदय की प्रार्थना भगवान सुनते हैं व मनोरथ पूरा करते हैं। अतः गिरे मत रहो, ऊपर उठो।

'आत्मशांति पाना, आत्मज्ञान पाना कठिन है।' ऐसा कहनेवाले तो बहुत हैं परंतु आत्म-परमात्म प्राप्ति जिन्हें कठिन नहीं लगती ऐसे महापुरुषों का मिलना कठिन है। यदि ऐसे महापुरुष मिल जायें तो युद्ध के मैदान में भी ज्ञान हो सकता है। अर्जुन को ज्ञान की प्राप्ति युद्ध के मैदान में ही हुई थी।

कबीरजी कहते हैं :

मन की मनसा मिट गयी, भरम गया सब दूर।
गगनमंडल में घर किया, काल रहा सिर कूट ॥

आज तक जिन मान्यताओं को पाला-पोसा कि 'इतना मिलेगा तब सुखी होऊँगा... इतना करूँगा तब सुखी होऊँगा... यहाँ जाऊँगा तब सुखी होऊँगा...', उन मान्यताओं को मिटाकर चूर-चूर कर दो।

अपने भूतकाल को याद कर-करके विचारों के जाल में कब तक फँसते रहोगे ? मन की मान्यताओं में कब तक उलझते रहोगे ? सब बंधनों को काटकर उठ खड़े हो, मुक्त हो जाओ। शरीर एवं मन के किले को छोड़कर आत्मा के आकाश में विहार करो। ऐसा ज्ञान पा लो कि तुम जीते-जी ही काल से परे हो जाओ और काल सिर कूटता रह जाय। ऐसा ज्ञान पाना कठिन नहीं है किंतु लोगों को अज्ञान को छोड़ने में, अपनी मान्यताओं को तोड़ने में कठिनाई लगती है। अज्ञान और मान्यताओं में बहने की बेवकूफी सदियों की है, अतः उसे छोड़ना कठिन लगता है, नहीं तो ईश्वर को पाने में क्या कठिनाई है ? ईश्वर तो अपना आत्मस्वरूप है।

वशिष्ठजी कहते हैं : 'हे रामजी ! फूल की पँखुड़ी तोड़ने में परिश्रम है किंतु अपने

आत्मस्वरूप को पाने में कोई परिश्रम नहीं।'

एक बार भी यदि वह ईश्वरीय सुख मिल जाय तो फिर किसी उपाय से जाता नहीं। संसार का सुख सदैव टिकता नहीं है और आत्मा का सुख कभी मिटता नहीं है। समाधि करो तो भी वह परम सुख नहीं जाता, भोजन करो तो भी नहीं जाता, सो जाओ तो भी नहीं जाता। अरे ! युद्ध करो तो भी नहीं जाता।

संसार की चीजों से सुख पाने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। जड़ चीजों से थोड़ा सुखाभास तो होता है लेकिन अंत में दुःख, शोक और वियोग ही हाथ लगता है। ऐसा कोई सुखभोग नहीं है, जिसके पीछे दुःख, भय और रोग न हो। तुम जड़ चीजों से प्रेम करोगे तो वे चीजें तुम्हें प्रेम नहीं करेंगी। तुम जेवर, कपड़ा, पैसा, गाड़ी-मोटर आदि वस्तुओं को चाहते हो लेकिन वे जड़ वस्तुएँ तुम्हें नहीं चाहतीं। यदि ईश्वर को चाहते हो तो वह तुम्हें सत्प्रेरणा देता है। तुम्हारी चाह तीव्र और सच्ची होने पर अपने-आप मिलने की प्रेरणा देता है, प्रकटाने का रास्ता दिखाता है।

वह परम चैतन्य है और अंतर में प्रेरणा करके तुम्हें सद्गुरु के पास पहुँचा देता है। सद्गुरु संयम और युक्तियों से आत्मस्वरूप तक पहुँचा देते हैं।

जो 'मुक्ति पाना कठिन है' ऐसा कहते हैं, उनकी बात न सुनो। जो नाविक कहे कि 'उस पार पहुँचना कठिन है...' उसकी नाव में कदापि न बैठो। जो उस पार पहुँच चुके हैं एवं तुम्हें भी पार होने की हिम्मत दे सकते हैं ऐसे सद्गुरु की नाव में बैठो। अपनी जीवन-नौका की पतवार उनके हाथों में सौंप दो। उनके आदेशानुसार जियो। उनकी बतायी हुई युक्तियों को तत्परतापूर्वक अपनाओगे तो उस परम सुख को, परम आनंद को, परम माधुर्य को पाना तुम्हारे लिए सहज हो जायेगा... आत्मज्ञान पाना सरल हो जायेगा... आत्म-साक्षात्कार करना आसान हो जायेगा...

*